शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2014

ऊंझा के माताजी: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

डा.मृगेश मनुभाई नायक
एम.एम.चौधरी आर्ट्स कालेज
राजेंद्र नगर, भीलोड़ा
साबरकांठा, गुजरात, भारत

आलेख

मानव संस्कृति की शुरुआत मध्य एशिया से हुई है। इस बात पर सभी इतिहाविद एकमत हैं। मध्य एशिया की ओर से आर्य इरान-अफगानिस्तान और हिंदी कुश के खैबरघाट के रास्ते से कश्मीर प्रदेश में दाखिल हुए। आर्य ने अपना डेरा वहीं जमाया, जहां अच्छी जमीन थी, पानी की उपलब्धता थी और वहां से आगे बढ़ते गए। पशुपालन और खेती उनके जीवन निर्वाह की मूलभूत आधार थे। इसमें से कई लोग गंगा-जमुना के मैदानों और तट के सहारे पंजाब से उत्तरप्रदेश, बिहार और नेपाल तक जा पहुंचे। कई लोग मध्यप्रदेश की ओर बढ़े। गुजरात में जिन्हें हम पाटीदार जाति से पहचानते हैं वे लोग पंजाब और राजस्थान की मरु भूमि को त्याग कर पुरानी सरस्वती नदी के तट से गुजरात में आए थे। यहीं से मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाड की ओर भी बढ़े। इस तरह वैदिककालीन युग से ये प्रजा काफी विचरण करती दिखाई देती है।

पंजाब से गुजरात में आकर जो आर्यों ने जमीन की बड़ी पाटी धारण की उन्हें पाटीदार नाम से पहचाना गया और बाद में उन्हीं लोगों को पटेल से जाना जाता है। पाटीदार लोग जहां भी गए, उन्होंने अपने कृषि कौशल से समाज में अपना स्थान बनाया। गांवों में जो आगे थे उन्हें गायकवाड़ सरकार ने पटेल का पद दिया। उसकी वजह से भी पाटीदार लोग बाद में पटेल से पहचाने गए। मध्यकालीन समय में राज्यों के बीच और विविध प्रजातियों के बीच युद्ध और संघर्ष चलता रहता था। इसी समय हाथ में तलवार लेकर जिस प्रजा ने बाकी लोगों की रक्षा की उसी प्रजा को हम क्षत्रिय नाम से जानते हैं। उसी क्षत्रिय जाति को उत्तर भारत में कुर्मीक्षत्रिय से पहचानते थे जो बाद में कुलमी, जुनली और अंत में कजबी से जानी गयी। इसमें और भी एक बात ये है कि उत्तर भारत के जिस गांव और प्रदेश से ये लोग आये वह नाम भी उन्होंने धारण किया। जेसे मोल्लोत, मांडलेडथी, रुसात, रोतिगदसे, अविदया, अवध से, कनोजिया कन्नौज से आए थे। उनका जो प्रदेश था उसकी पहचान उन्होंने धारण की।

पाटीदारों का गोत्र सूर्यवंश के कश्यप ऋषि के पुत्रों का है। कुर्मी ऋषि के पुत्रों के नाम से भी पाटीदार पहचाने जाते हैं। और एक मान्यता ऐसी भी है कि भगवान का कूर्मावतरा हुआ था। इससे भी कलबी नाम मिला है। पाटीदारों का कूर्मावतार भगवान के वंशज भी माने जाते हैं। इससे ये साबित होता है कि पाटीदार ही क्षत्रिय थे और उनकी कुल रक्षक कुलदेवी मा उमिया हैं।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2014

श्री उमिया माता जी का मंदिर ऊंझा गुजरात में कब निर्माण हुआ इसके बारे में कोई आधारभूत जानकारी नहीं मिलती है। लेकिन वहीवंचा, बारोट जाति के लोगों की नोंधवाले दस्तावेजों से ये बात जानने को मिलती है कि कडवा पाटीदार के बावन पुतलों को मा उमिया ने सजीव किया था। उन्हीं कडवा पाटीदार को आदिपुरुषों से जाना जाता है। इसी बात से भगवान शंकर भी प्रसन्न हुए और उमिया माता जी की सर्वप्रथम स्थापना उमापुर यानी की ऊंझा में की। वही उमिया मां पाटीदारों की कुलदेवी कहलाती हैं। इसके बाद ऊंझा नगर के राजा कतपालसिंह और ब्रजपाल सिंह ने मां उमिया के मंदिर का निर्माण किया। उसके बाद इस नगर के राजा अवनीयत बने। उन्होंने शिवालय और मा उमिया जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करवाई और सवा लाख श्रीफल का होम करके बहुत बड़ा महायज्ञ किया था। इसमें घी के पूरे कुएं भर कर होम किया था और इसमें 1800 ब्राह्मण वेदोच्चार स्तुति करने के लिए बैठे थे।

संवत् 1356 में दिल्ली की गादी के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने इस मुल्क पर आक्रमण किया। इस वक्त पाटण में करणहोला का राज्य था। उसने उसके प्रथम माधव के भाई केशव की सुंदर पत्नी का हरण किया और केशव को मार डाला। इसी कृत्य का बदला लेने के लिए माधव ने दिल्ली के राजा खिलजी को पाटण पर चढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। खिलजी ने अपने सरदार सूबा उलुघखान को पाटण पर चढ़ाई करने को भेजा। उलुघखान ने गुजरात के काफी गांव के लोगों को नुकसान पहुंचाया और हिंदू मंदिरों को तोड़ डाला। इसी समय उमिया माता जी मूर्ति को तोतलातोने मोटा मोढ़ छिपा दी। वर्तमान में जहां गोख है वहां पुराना मंदिर था। वही पुराने मंदिर के अवशेषों के रूप में आज भी
कलात्मक खंडित मूर्तियां और शेषशायी भगवान विराजमान देखने को मिलते हैं।

ऊंझा नगर का नाता पहले से ही पाटण के सोलंकी वंश के राजाओं के साथ अच्छा था। पाटण के राजा करण सोलंकी और महारानी मीनलदेवी का लग्न ऊंझा में ही हुआ था। मीनल देवी ऊंझा के माल्लोत शाखा के हेमाला पटेल की पुत्री थी। उसीका ही पुत्र सिद्धराज जयसिंह था। ऊंझा का यही महत्व काफी नोंधनीय बनता है कि महाप्रभावी राजा सिद्धराज जो इतिहास प्रसिद्ध है, और पाटण में उनके राज्य का सूर्य बहुत दीप्तिमान था। उसीका मोसाल ऊंझा में था। पाटण के साथ अच्छे नाते की वजह से ही पाटीदार कौम ऊंझा में स्थिर हुई।

मध्ययुगीन समय में मुसलमानों ने मंदिरों को जो तोड़ने का काम किया, इसमें हमने देखा कि उमिया माताजी का मंदिर भी तोड़ा गया था। लेकिन बाद में 18वी और 19वीं सदी में हमारे यहां अंग्रेजों का शासन के वक्त काफी शांति और अमन का था। उसी समय पाटीदारों ने माताजी का ईंट-चूने का मंदिर निर्माण किया और उसकी पूजा-अर्चना करने लगे। ये ईंट-चूने का मंदिर कब और किसने निर्माण कराया उसकी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन इस मंदिर के किले का निर्माण विक्रम संवत 1873 में शुरू हुआ जो संवत् 1879 में पूर्ण हुआ। इस किले में पूर्व, पश्चिम और उत्तर ऐसे तीन दरवाजों का निर्माण किया है। किले में छः बुर्ज और एक खिड़की भी रखी गई है।

हमने पहले देखा कि पाटीदार कौम काफी मेहनती है। किसी अन्य के सामने मदद के लिए हाथ न

फैलाने वाले ये पाटीदार समाज के अन्य जरूरतमंद लोगों को मदद करने के लिए उमिया माता जी मंदिर संस्थान की स्थापना की गई है। इसी संस्था की तरफ से सामाजिक उत्थान और जरूरतमंद लोगों को मदद पहुंचाने के लिए पंद्रह संस्थाएं कार्यरत हैं। उमिया माताजी संस्थान की ओर से उच्च शिक्षा सहायता निधि की रचना भी की गई है। जिसमें से उच्च शिक्षण प्राप्त करने के लिए छात्रों को बिना ब्याज के लोन दिया जाता है।

जगत जननी मां उमिया ही स्वयं पार्वती हैं, अन्नपूर्णा हैं, मां की श्रद्धा भक्ति से आदमी सुख, समृद्धि और शान्ति प्राप्त करता है। अगणित यात्रियों को उमिया माताजी की श्रद्धा ने अच्छा फल दिया है। कई लोगों ने मां के दर्शन का लाभ पाकर धन्यता का अनुभव किया है। मां सबको मनोवांछित फल देती है। खास कर पूनम, एकादशी उत्सवों पर मां के दर्शन के लिए काफी लोग आते हैं।

यहां श्री उमिया माता जी की प्रतिदिन शास्त्रोक्त विधि से ब्रह्म मुहूर्त में श्रीसूक्त पाठ से अभिषिक्त करके पूजा होती है। उमिया माता की सवारी हररोज अलग-अलग वाहनों पर होती है, जैसे सोमवार को नंदी की सवारी, मंगलवार को मयूर की सवारी, बुधवार को सिंह की सवारी, गुरुवार को गजराज की सवारी, शुक्रवार को कुकड़े की सवारी, शनिवार को ऐरावत हाथी की सवारी और रविवार को बाघ की सवारी होती है। हमारे वेद भी बताते हैं कि उमिया धन-धान्य की देवी हैं। इसीलिए कृषिकार-खेडूत मां उमिया की वेदकालीन समय से पूजा करते आ रहे हैं। पांच हजार वर्षों से पूरी आस्था ओर श्रद्धा से शक्तिपूजा करने वाली पाटीदार प्रजा इतिहास में विरल और बेजोड़ है।

संदर्भ ग्रंथ

1 श्री उमिया माता जी दर्शन, पटेल सीताराम
2 पाटीदार विश्वकोष, डॉ.मंगुभाई पटेल
3 पाटीदार विश्वकोश, डॉ ईश्वरलाल ओझा
4 अढारमी शताब्दी महोत्सव स्मृति ग्रंथ